धर्म-सन्देश

श्री परमहंस आश्रम शक्तेषगढ़चुनार (मिर्जापुर) से पधारे स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी महाराजनेमहाकुम्भ पर्व सन् १९९८ के पावन अवसर पर नीलधारा चण्डीद्वीप, हरिद्वार में गीता को एकमात्र मानव-शास्त्र के रूप में उद्घोषित कर कहा कि जिस समयगीताकहीगईउससमयधर्मकेनामपरप्रचलितआजके मज़हबों,सम्प्रदायोंका कहींनामोनिशान भीनहींथा। उससमय सम्पूर्णविश्वकाएकमात्रधर्मशास्त्रगीताथी।

गीता आपके सम्पूर्ण दुःखों के नाश तथा अक्षय सुख परमात्मा के प्रत्यक्ष दर्शन का शास्त्र है, जिसकी प्राप्ति की एक निश्चित क्रियाहै-इन्द्रियसंयम के साथ केवलएकपरमात्मामें श्रद्धा का केन्द्रीयकरण, उनके किसी दो-ढाई अक्षर केनामका जप, उनमें स्थिति वाले किसी तत्त्वदर्शी महापुरुष की सेवा, उनके रूप का ध्यान और उनके आदेशों का पालन। इसी को गीता में कर्मकहा गयाहै। इसीकोआचरणमेंढालनागीताका यज्ञ है। जिसमें बाहर वेदी बनाकर अग्नि में तिल, जौ, घी की आहुतिडालनेका विधानगीतामेंनहींहै।इसकेअतिरिक्तसाधन के नाम पर तरह-तरह की क्रियाएँ करनेवाले श्रीकृष्ण के अनुसार, मूढ़बुद्धि, अविवेकी और असुर हैं। गीता का यज्ञ मानसिक है।

महाराजश्री नेकहाकिसामाजिकव्यवस्थाकार गीता की दुहाईदेकरसमाजमेंऊँच-नीचमूलकगर्हित-जाति व्यवस्था को भगवान् की बनाई हुई कहते हैं; किन्तु गीता के अपने भाष्य ''यथार्थ गीता'' का सन्दर्भ देकर महाराज जी ने चुनौती देकर कहाकि गीता का एक भी श्लोकमनुष्य मनुष्य में बँटवारानहीं करता। गीता में जिस वर्ण-धर्म की चर्चा है, वह साधन के चार आंतरिक सोपानहैं।प्रत्येक साधक शूद्र स्तर से साधन में प्रवेश करता है, वही क्रमोन्नतसाधन से वैश्य, क्षत्रिय होते ब्राह्मण की स्थिति को भी पार कर भगवत्ता से संयुक्त होकर परमहंस हो जाताहै।

महाराज जी ने बताया कि हमारे भारत में छुआछूत कभी था ही नहीं! जिस तरह लोग अपने बच्चों के नाम राम, कृष्ण इत्यादि रख लेतेहैं उसीप्रकारकिसीसमय व्यवसाय के अनुरूप गठित विभिन्न जातियों के नाम यौगिक शब्द के अनुरूप ब्राह्मण, क्षत्रियादिरखलियेगये।वस्तुतःये योग के शब्दहैं।गीताकावर्णजन्मनानहींहै।

गीताविश्वका धर्मशास्त्र है। सौभाग्य से इसका प्रस्फुटन भारत में हुआ इसलिये यह भारतीयों को जगद्गुरु की महिमा से मण्डित करनेवाला उन सबका अपना धर्मशास्त्र है। जिस दिन गीता और उसकी व्याख्या ''यथार्थ गीता'' को राष्ट्रीय स्तर पर धर्मशास्त्र के रूप में मान्यता मिल जायेगी,उस दिनसेभारतकीधार्मिकफूट सदा-सदा के लिए समाप्त हो जायेगी। साम्प्रदायिक दंगों की जगह नहीं रह जायेगी। एकता के नाम पर विभिन्न आयोजनों के आडम्बरों पर खर्च होनेवाले अरबों-खरबोंरुपयेबच जायेंगे।विश्वमेंकहीं भीबैठाभारतीयचैनकीसाँसलेसकेगा।

अपने ही देश में अल्पसंख्यक और अपमानितहोरहेसवर्णोंकेमस्तकसेकलंक काटीकामिटजायेगा। आपका गौरव सदा-सदा के लिए अक्षुण्ण होजायेगा। अतः गीता कोधर्मशास्त्रकीमान्यतादें।